iJRASET
International Journal For Research in Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH
IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 13 Issue: V Month of publication: May 2025

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2025.70433

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue V May 2025- Available at www.ijraset.com

'मधु कांकरिया के उपन्यास "सेज पर संस्कृति" का समीक्षात्मक अध्ययन'

डॉ.गीता संतोष यादव[1], श्रीमती.अनुष्का प्रदीप पाचंगे[2]
[1]सहयोगी प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, एस.एम्.आर.के.महिला महाविद्यालय, नाशिक -४२२००५
[2]शोध-छात्रा –हिन्दी विभाग, एस.एन.डी.टी.महिला विद्यापीठ, मुम्बई- २०

Abstract शोध –सार :हिंदी साहित्य में मधु कांकरिया एक प्रमुख कथाकार के रूप में जानी जाती हैं, जिनकी रचनाएँ सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं को गहराई से उकेरती हैं। उनका उपन्यास 'सेज पर संस्कृति' जैन धर्म की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित है, जहाँ धर्म, संस्कृति, स्त्री-जीवन और मनोवैज्ञानिक द्वंद्वों को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यह उपन्यास न केवल जैन समाज के रीति-रिवाजों को दर्शाता है, बल्कि स्त्री के आत्मसंघर्ष और सामाजिक बंधनों के बीच उसकी मानसिकता को भी उजागर करता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक पहलुओं का विश्लेषण करना है, जिसमें जैन धर्म की सांस्कृतिक परंपराएँ, स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलताएँ और नारी मन के अंतर्द्वंद्वों को समझाने का प्रयास किया गया है।

Key Words (कुंजी शब्द):जैन धर्म, छुटकी,माँ,संघमित्रा,दिव्यप्रभा,मालविका,अपूर्वा,सुनील मुनि, मठ,आदि |

I. प्रस्तावना

सेज पर संस्कृति' उपन्यास में जैन समाज की धार्मिक मान्यताएँ, आचार-विचार और संन्यास की अवधारणा को विस्तार से चित्रित किया गया है।प्रस्तुत उपन्यास नायिका संघमित्रा जैन धर्म में व्याप्त कुरीतिओं,अन्धविश्वासों को उजागर करने का प्रयास करती है| उनकी माँ पति और पुत्र की मृत्यु के बाद घर की बदहाली और आजीविका की समस्या सुलझाने के लिए अपनी बेटियों के साथ दीक्षा लेने का निर्णय करती है| किन्तु बड़ी बेटी दीक्षा नहीं लेना चाहती वह माँ को समझाती है कि कुछ दिनों की बात है|अपनी पढाई पूरी कर वह घर की जिम्मेदारी ले लेगी|साबुन बनाने का उसका पुस्तैनी कारोबार भी वह संभाल लेगी| किन्तु माँ के जिद के आगे संघमित्रा की एक नहीं चलती| अब संघमित्रा को लगता है कम से कम वह अपनी छोटी बहन छुटकी तो बचा ले इस दीक्षा से| लेकिन, अथक परिश्रम,जैन धर्मगुरुओं से गुहार लगाने पर भी कहीं उसकी सुनवाई नहीं होती| अंतत: छुटकी जैन धर्म में दीक्षित हो साध्वी दिव्यप्रभा बन जाती है|एक दिन साध्वी दिव्यप्रभा को जब पता चलता है कि साध्वी शशिप्रभा ने आत्महत्या कर ली है तो उसे बहुत दुःख होता है|सन्यास जीवन से अबतक उसका मोहभंग हो चुका था किन्तु सामाजिक दबाव के चलते वह किसी से कुछ कह नहीं पा रही थी| इन्हीं दिनों एक कथा में आये विजयेन्द्र मुनि से जब वह अपनी जिज्ञासा और व्यथा का उद्घाटन करती है तो वे भी द्रवित हो उठते हैं और सत्य की खोज में ऐसा लगता है कि,प्रेम ही सर्वोच्च है|वे दिव्यप्रभा के साथ सन्यास जीवन त्यागकर गृहस्थ आश्रम में आना चाह रहे थे| इसकी चर्चा वे अपने गुरू भाई अभयमुनि से करते हैं जो दिव्यप्रभा को उसके मठ से लाकर विजयेन्द्र मुनि को सौंपने का कार्य करने वाले थे|किन्तु,अभयमुनी विजयेन्द्र मुनि से धोखा और दिव्यप्रभा से बलात्कार कर जैन धर्म में दीक्षित मुनियों की कुंठाओं का पर्दाफाश करते हैं|

सामाग्री : सेज पर संस्कृति उपन्यास –मधु काँकरिया |

शोध-पद्धति : विवेचनात्मक तथा विवरणात्मक

जैन धर्म में अहिंसा, त्याग और साधना को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है| जिसका प्रभाव पात्रों के जीवन पर स्पष्ट दिखाई देता है। उपन्यास की नायिका के माध्यम से लेखिका ने जैन समाज में स्त्री की भूमिका और उस पर लादे गए धार्मिक बंधनों को उजागर किया है। जैन समाज में स्त्रियों को धार्मिक अनुष्ठानों में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर मिलता है, लेकिन साथ ही उन पर पारंपरिक मर्यादाओं का बोझ भी रहता है। 'सेज पर संस्कृति' की नायिका इसी द्वंद्व से जूझती है—एक ओर उसकी आध्यात्मिक आकांक्षाएँ हैं, तो दूसरी ओर सामाजिक अपेक्षाएँ उसे बाँधे रखती हैं। उपन्यास में विवाह,

ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue V May 2025- Available at www.ijraset.com

विधवा जीवन और स्त्री की स्वायत्तता जैसे विषयों को गहनता से उठाया गया है।जैन समाज भी भारतीय सामाजिक ढाँचे से अछूता नहीं है। 'सेज पर संस्कृति' में व्यापारिक वर्ग (सेठ समाज) और धार्मिक अभिजात्य वर्ग के बीच के तनावों को दर्शाया गया है। धन और धर्म के बीच का अंतर्संबंध भी उपन्यास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। प्रस्तुत उपन्यास मूलतःचार अध्यायों में विभाजित है| १) दि अहिंसा टाइम्स, २) सेज पर संस्कृति, ३) वजूद,४) अन्वेषण आदि|

'सेज पर संस्कृति' की नायिका का चरित्र मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत जटिल है। वह एक ओर धर्म और समाज के प्रति समर्पित है, तो दूसरी ओर अपने व्यक्तित्व की खोज में संघर्षरत है। उसके मन में आकांक्षा और दायित्व,भक्ति और विद्रोह, प्रेम और त्याग, के बीच निरंतर द्वंद्व चलता रहता है। उपन्यास में नायिका का अकेलापन एक मनोवैज्ञानिक सत्य के रूप में उभरता है। वह समाज से कटी हुई महसूस करती है क्यूंकि उसकी माँ पति और पुत्र के असामयिक मृत्यु के बाद अपनी पहचान के लिए आध्यात्मिक मार्ग को चुनती है। जहाँ वे सुरक्षित रह सकें तथा उनकी रोजी-रोटी की समस्या का समाधान हो सके|यहाँ विरक्ति के भाव को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से समझा जा सकता है| क्या यह सच्ची आत्मानुभूति है या पलायन? उपन्यास के पुरुष पात्र भी सामाजिक दबावों और अपनी कामनाओं के बीच फँसे हैं। उनकी मानसिकता में धर्म और भौतिकता का टकराव देखने को मिलता है, जो भारतीय समाज की एक सामान्य विशेषता है।

उपन्यास की साध्वी अपूर्वा भी अपने साधु जीवन के वरण के सन्दर्भ में अपना वृतान्त बतलाते हुए कहती है कि-“मैं जिस समय तेरह वर्ष की गई थी,माँ गुजर गई थी मेरी|मेरे बाल इतने लम्बे,घने और काले थे कि लोग कहते हैं मैं “मैं ब्राह्मी आँवला तेल” की साक्षात् मॉडल हूँ|आसपास की औरतें मेरे बालों को देखने आतीं| मेरी भाइयों में इतना प्यार दिया कि माँ की कमी कभी खली नहीं| मैं इतनी खूबसूरत थी कि,हर कोई मुझे प्यार देता पास बैठाता। सिनेमा देखना, घूमना, सजाना- सँवरना मुझे बहुत भाता|छोटी उम्र में ही मैं साड़ी पहन मैं काँच के सामने खड़ी होती और कभी बैजंतीमाला की नकल उतारती तो कभी वहीदा रहमान की।उन्हीं दिनों हमारे पड़ोस में एक नया परिवार आया।जी मैं अहमदाबाद में रहती थी। उसी परिवार में एक लड़का था सुदर्शन। इतना खूबसूरत था वह कि उसके आगे अँधेरा रोशन हो जाए। बुझे दीये जल उठे|अरे वह हँसता तो जेठ भी सावन हो जाता। मैं जब भी जाती उसके वहाँ मेरी दोनों चोटी पकड बच्ची की तरह मुझे प्यार करता, चिढ़ाता। वह सचमुच मुझे बच्ची ही समझता था,पर मैं उसमें पुरुष खोजती थी।मेरे चुटीले रंगों को देख वह अक्सर मजाक करता-एक साथ इतने रंग,अरे अभी ही सारे रंगों को पहन डालोगी तो बाद में क्या पहनोगी? चूना रंग।संघमित्रा के हाथों को अपनी हथेलियों में दबाकर कहने लगी-देखो, कितना सच कहा था उसने । कई बार मजाक में वह मेरी हथेलियों की रेखाओं को पढ़ने लगता। में पूछती-मैं क्या बनूँगी ?वह कहता-सोनिया (मेरे संसार पक्ष का नाम) तुम सब कुछ बनोगी।वह फिर उदासी भरी हँसी हँसती -देख लो, एक तरह से उसकी यह बात भी सच ही निकली। जो साध्वी बन गई, वह जानो सब रिश्तों से ऊपर सब कुछ बन गई।अपनी अतीत की स्मृतियों को खोलते हुए वह कहती हैं एक शाम आते-आते उसने मेरा रास्ता रोक दिया... उस दिन शायद पहली बार उसने भी मुझमें एक स्त्री की छाया देखी थी, वह मुझे... और कहते-कहते वे फिर रुक गईं, जैसे चलती गाड़ी को एकाएक ब्रेक लग गया हो।वे सजग हो उठी। देखिए कुछ बातें साधु मर्यादा के विरुद्ध होती हैं। वह आगे बताती हैं कि दूसरी सुबह कॉलेज जाते वक्त दुर्घटना में उनका हीरो होंडा ट्रक के नीचे आ गया था। हीरो चला गया था... बचा रह गया था सिर्फ़ टूटा पिचका होंडा। मैं जब उसके यहाँ पहुंची, उसकी चिता सज चुकी थी। जिद कर मैंने चादर हटाकर उसका मुँह देखा तो मेरा सर्वांग सिहर उठा... मैं काँप उठी । ऐसा सुदर्शन चेहरा और कैसी खाक पड़ी। आँख-नाक-होंठ सब चिथड़ा हो गए थे । लाल-काले मांस का लोथड़ा भरा चेहरा। वह क्षण ही महाचेतना, महावैराग्य का क्षण बन गया। वह क्षण ही सत्य था। क्षण की कौंध में मैंने ज़िन्दगी की निरर्थकता और धर्म की सार्थकता देखी। उसकी मौत में मैंने अपनी मौत की परछाईं देखी। कितना आनन्दवादी था वह !१

साध्वी किरणप्रभा की कथा भी कुछ इसी प्रकार की है वे कहती हैं -अलराव शहर की बात |जहाँ उनका बचपन, साधु-साध्वियों की संगत में ही बीता,पर दीक्षा ही लूँगी ऐसा कहाँ सोचा था|अरे, सोचने से कोई दीक्षा थोड़े ही ले सकता है|वह तो हठात् कुछ घट जाता है, कोई झटका लगता है,डोर टूट जाती है और संन्यास की राह निकल जाती है। नहीं, ऐसा विशेष कुछ घटा भी नहीं। जैसे हर लड़की बड़ी होती है वे भी हुई। उनका परिवार धार्मिक परिवार था, अतः मन्दिर-देवड़ा और साधु-संगत के साथ-साथ बालपोथी से लेकर पाणिनि की व्याकरण तक पढ़ी। देखते-देखते जवानी ने उनके द्वार पर भी दस्तक दी। माँ-बाप उनकी शादी के लिए चिन्तित हुए-बेटा खाए रोटी तो बेटी खाए बोटी कहावत की तरह| उन्हें परेशान कर देनेवाले चिन्ता-भरे दिनों में पास के ही गाँव से एक रिश्ता आया । सास-श्वसुर देखने आए और उन्हें पसन्द कर शगुन देकर बात पक्की कर चले गए। बाद में उनके सुपुत्र पधारे। उन्हें वे पसन्द नहीं आई। सास-श्वसुर फक् । दोनों बात के धनी। प्राण जाय पर वचन ना जाई की टेक। उसी परिवार के छोटे लड़के ने आगे बढ़कर माँ-बाप के वचन की रक्षा की और खुद सगाई करवा ली। दुगुने उत्साह और धूमधाम से पिता ने ब्याह रचाया। बेटी मन मैला न करें, इसलिए हैसियत से बढ़कर

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue V May 2025- Available at www.ijraset.com

खर्च किया। कुन्दन का सेट और सोने की बिछिया दहेज में दी। पूरे दो दिन बारात की खातिर की। इस पर भी नहीं भरा मन तो हर बाराती को विदाई में चाँदी का प्याला दिया। पर कौन टाल सकता था होनी को ?सुहागरात के समय। गुड़िया-सी सजी-धजी वे सेज पर। जैसे ही पति अन्दर घुसे, वे डरी-सहमी एक ओर सिमट गई। अंगड़ाई लेते हुए पतिदेव ने अपने पुरुषार्थ के दम्भ में ऐंठते हुए उनसे कहा-डरो मत, मेरे बड़े भाई ने तुम्हें कहीं का नहीं रखा तो क्या, मैंने तो तुम्हारा उद्धार कर दिया ना। इधर उनके मुँह के यह दम्भ भरी उक्ति निकली और इधर मानो उनके प्राण ही निकले। लगा जैसे उनकी कोई औक़ात ही नहीं रह गई है, एक ने ठुकराया, दूसरे ने रहम कर अपना लिया। कितनी गई-गुजरी हैं वे। बस उसी क्षण मन में विरक्ति भर गई...लगा जब तक संसार में रहूँगी, इसी आग में जलती-भुनती रहूँगी। नहीं, प्रतिशोध की भावना से ऐसा नहीं किया, यह स्वाभाविक विरक्ति थी। वे बदले में विश्वास करती ही नहीं क्योंकि दूसरे से लिया जानेवाला बदला भी अन्ततः अपनी ही हार होता है।[२]

मधु कांकरिया जी कहती हैं-"स्त्रियों पर ही नहीं धर्म की मार उन सब पर पडी जो निर्बल,अज्ञानी,वंचित और असहाय थे|यह सिर्फ भारत में ही नहीं,विश्व के सभी देशों में हुआ |मध्यकाल में दास-प्रथा ईसाई धर्म का अभिन्न अंग थी| पोप-पादरी एवं कुलीन वर्ग के संरक्षण में यह कथा फलती-फूलती रही|इसलिए ईसा मसीह ने करूणा,प्रेम,दया और भाईचारे का सन्देश अवश्य दिया पर पहले से चली आ रही दास,अर्धदास प्रथा, शोषण और विषमता के प्रश्न पर वे मौन रहे|संत पॉल एवं संत अगस्ताइन ने इस दास प्रथा को धर्मसम्मत बताते हुए इसके सन्दर्भ में धार्मिक संहितायें जहीर की|"[३] धर्म के बारे में और आगे बतलाते हुए वे कहती हैं कि,धर्म सिर्फ स्त्री ही नहीं,उन सभी के प्रति उदासीन रहा जो शक्तिहीन,वंचित एवं परवश रहे|हाँ, "सभी धर्मों ने गरीबों पर मलहम लगाने के लिए दान-पुण्य की प्रशंसा अवश्य की,पर उत्पादन के साधनों पर सभी के समान अधिकारों की घोषणा किसी भी धर्म में नहीं हुई|यही कारण था कि कुलीन वर्ग ने धर्म का संरक्षण और पोषण किया और धर्म ने सामंती समाज का हित साधा |"[४]अक्सर देखा जाए तो स्त्री को नियंत्रण में रखने के लिए धर्म की आड़ ली जाती रही है|

संघमित्रा और मालविका छुटकी के संन्यास को रोकने के लिए अथक प्रयास करते हैं तभी साधू जीवन से जुडी हुयी अनेक बातें उनकी समझ में आती हैं| सुनील मुनि के पास भी वे इन्हें विचारों से गयी थीं कि वे उनसे छुटकी के सन्यास जीवन की दीक्षा न दी जाए||उनके मुनि जीवन में पदार्पण की जानकरी इकठ्ठा करने हेतु वे सुनील मुनि से पूछती हैं -महाराज, आप अपनी वर्तमान स्थिति तक कैसे पहुंचे ? किसने प्रेरित किया आपको इस जीवन को वरण करने के लिए?क्या कहे सुनील मुनि। चेहरे पर लिपटा गहन उदासी का। अतीत के चमन से पाखी एक-एक कर उड़ने लगे। कहीं कोई कबूतरी कहीं कोई हंसिनी... कहीं बुलबुल तो कहीं चुलबुल कहाँ रंग और नूर की यह दुनिया और कहाँ यह उदासी भरा जीवन

एक दीर्घ निःश्वास ली उन्होंने। चेहरे पर अतृप्ति के भाव साफ झलके। टूटे-टूटे स्वरों में निकली जीवन के टूट की वह कहानी-क्या बताऊँ, बहुत रहस्यमय है यह जीवन। कब कौन-सी घटना जीवन की दिशा पलट आपको भिक्षुक बना दे...कहना मुश्किल है। पिता व्यापारी थे पर सुखी-सन्तुष्ट जीव थे। उनके अपने जीवन मूल्य थे। कभी चोरी का माल नहीं खरीदते थे। चमड़े और शराब की कम्पनियों के शेयर तक नहीं खरीदते थे कि यह पैसा अनैतिक है। बड़े से बड़े रिश्तेदार के यहाँ तक भोजन नहीं करते यदि उनके यहाँ बेईमान और भ्रष्ट पैसा आता हो। साफ-साफ कह देते वे-जैसा खाए अन्न वैसा बने मन। सुनील को खीझ होती, हाथ आई लक्ष्मी को जाते देख। इसलिए वे बी.कॉम. के साथ-साथ ही दुकान पर बैठने लगा। धीरे-धीरे उन्होंने व्यापार में खूब बरकत की और पिता से अलग अपनी दुकान और अपना शोरूम खोला। लाखों की हेरा-फेरी की। लोहे की स्ट्रिप पर ब्रास और अल्युमिनियम की पॉलिश कर उन्हें खूब बेचा। चोरी के बर्तनों को लेता और उन्हें हाथोंहाथ गलवा देता जिससे सारे सबूत हाथोंहाथ मिट जाए। मिलिट्री तक पहुँच गया था। घटिया माल सप्लाई करता, बढ़िया दाम लेता । उन्हें पैसों के पीछे इस प्रकार पागल होते देख पिता चेताते-तू पैसों को नहीं, पैसा तुझे खा रहा है। दैव-सा रूप, यौवन, दौलत और शोहरत...सब कुछ तेरे पास । आसपास सब कुछ महकता हुआ। प्रशंसा और सफलता की बौछारों में भीगते सुनील, वे सोचते कुछ भी अप्राप्य नहीं है उनके लिए... बस हाथ भर बढ़ाने की देर है। सफलता का नशा विवेक को दबोच लेता है। एक से बढ़कर एक रिश्ते आते उनके लिए पर बादलों पर उड़नेवालों को जमीन पर चलनेवाला हर शख्स बौना ही नजर आता है। हर रिश्ता बौना नजर आता मुझे । मूर्छित नैतिक चेतना और सफलता का नशा जो न कराए सो थोड़ा। हर लड़की तितली-सी लगती। सहज ही घुल-मिल जाते वे उससे ।गुल्छर्रे उड़ाते और जब 'ऊपर के कोर्ट' से रिश्ते पर मुहर लगाने की बात उठती तो वे कन्नी काट जाता। इस उस बहाने से मना कर देता। इसी प्रकार एक के बाद एक तैंतीस लड़कियों के साथ गुल्छर्रे उड़ाते वे यौवन के उन्मुक्त आकाश में उड़ते रहे। उन्हीं में से एक लड़की जो दूब की तरह शान्त और अग्नि की तरह तेज थी, उसने उन्हें शाप दिया-तुमने इतनी लड़कियों को अपमानित किया है, देखना कभी भी स्त्री संसर्ग का आनंद नहीं ले पाओगे। शायद उसी का फलीभूत हुआ दूसरी सुबह उठते बायें गाल पर सफेद दाग| सामान्य दाग समझकर उन्होंने साबुन से धोया बार-बार| मगर दाग उन्हें मुँह चिढ़ाता रहा। दूसरे दिन डॉक्टर को दिखाया तो उसने कहा- यह साधारण दाग नहीं है।

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue V May 2025- Available at www.ijraset.com

उनका सर्वांग काँप उठा| जैसे किसी बहुमंजिली इमारत से सीधा सड़क पर फेंक दिया गया है। कल्पना में देखने लगा-आधा गोरा,आधा काला चितकबरा चेहरा। इस चेहरे के साथ कैसे रह सकूँगा मैं वैभव एवं विलासिता की इस मांसल दुनिया में |ओफ् जिस कुरुपता से इतनी घृणा करता था,उसी में नहा गया था मैं| हर पल वे आत्महत्या की सोचते हर पल ध्यान, मेरा हाथ गाल पर ही। मुझे लगता, यह दाग जैसे मिनट मिनट अदृश्य रूप से बढ़ रहा है। पागल की तरह वे दाग को मापने की कोशिश | हर आधे-आधे घंटे में बाथरूम जाता और दाग का निरीक्षण करता। न दिन न रात। शाम होते ही जब राजमहल-सा मेरा घर बत्तियों की रोशनी से जगता उठता, मेरी आत्मा में काली रात का अंधेरा पसर जाता। हर वक्त मेहमानों से गुलजार रहनेवाले हमारे घर में कभी कोई मेहमान, कभी कोई बच्चा अकस्मात् पूछ ही बैठता-अरे, यह दाग कैसा? ऐसे विचलित क्षणों में मुझे लगता मेरा सारा वजूद सिमटकर बस एक दाग भर रह गया है। उधर रात के साथ जगमगाहट बढती जाती, इधर मेरे भीतर की तोड़-फोड़ टूटन। पहली बार लगा, जीवन में कुछ भी हमारे हाथ में नहीं है| जो जीवन सप्ताह भर पूर्व मेरी मुट्ठी में था..वही अब मुट्ठी से फिसलकर जमीन की धूल पर कण-कण बिखर गया था। ओफ्। कितना मुश्किल था मुझे अपने को स्वीकार कर पाना। मेरा मन करता सब कुछ जला हूँ...मेरे अत्याधुनिक कपड़ों से भरी आलमारी, ड्रेसिंग टेबुल। मेरा मन करता धरती के सारे दर्पण तोड़ डालूँ... ओफ्...यह कितना अच्छा था कि आदमी अपना चेहरा नहीं देख पाता था।सुनिल ने बाहर निकलना भी बन्द कर दिया था क्योंकि उनमें अब किसी को खींचने और रिझाने की कुवत नहीं रह गई थी। यह अहसास जानलेवा था कि अब उनकी जिन्दगी में कोई रमणी नहीं आनेवाली थी, यदि कोई आ भी जाएगी तो उन पर तरस खाकर या अपनी परिस्थितियों से समझौता कर... पर किसी का दिलबर, किसी का प्रियतम बनने की कूवत वह खो चुके थे।वे मर सकते थे पर स्वयं को किसी से कमतर स्वीकार नहीं कर सकते थे।

मैं विशिष्टता का आदी हो चुका था, इसलिए अपनी बेरोशन और बेरंग जिन्दगी के लिए अकेले बैठा रहता|उन उदास पलों में मुझे वे सारे कर्मचारी एक-एक कर मुँह चिढाते जिन्हें उनकी बनावट के चलते मैंने कालू सिंह,नाटू,मैंगा,ऊँट,जैसे अजीब-अजीब नाम दे रखे थे |उन्हीं दिनों कलकत्ते में उदित महाराज पधारे | उनसे कहा-महाराज मन उद्विग्न और चित्त विरचित है। मैं अशांत हूँ। जिन्दगी ने एकाएक इतना बड़ा धोखा दिया है कि अब मैं जीना नहीं चाहता। मेरी जिन्दगी का सूरज पूरी तरह से डूब चुका है। अब बस अंधेरा...।

उन्होंने कहा-अपने अनुभवों का आध्यात्मिक उपयोग करो और दीक्षा ले लो

मैंने छूटते ही विरोध किया-महाराज मुझे ईश्वर नहीं, शान्ति चाहिए। इन सफेद दागों ने (तब तक एक दाग उनके कान के नीचे गर्दन पर भी उग आया था)उनका जीना हराम कर दिया है। स्वप्न में भी उनका पीछा नहीं छोड़ते थे दाग। जो कभी उनके नूरानी चेहरे को देख आहें भरते थे, रश्क करते थे उनसे। उनकी आँखों में अपने लिए तरस खाने का भाव सहन नहीं कर सकते थे| आत्महत्या अब उन्हें प्रेमिका की तरह लुभाती है।उन्होंने कहा-तुम दुखी इस वजह से हो कि तुम ऊँची लौ में जलने के आदी थे पर अब एकाएक केन्द्र से परिधि पर आ गए हो। दीक्षा लेकर साधु बन जाओ तो तुम्हारे दीये में नई बाती लग जाएगी और तुम्हें फिर से केन्द्र मिल जाएगा। तुम्हारा चित्त भी शान्त हो जाएगा क्योंकि यह समाज एक चितकबरे युवक को चाहे इज्जत नहीं बख्शे पर साधु के लबादे में उसका चितकबरापन भी ढक जाता है।बस मैं उस पार से इस पार चला आया।बोलते-बोलते हँस दिए वे, एक दबी-दबी और उदास हँसी। और उसके बाद कुछ क्षणों तक खामोशी सबके बीच पसरी रही। अपने-अपने जीवन से उपजी एक दार्शनिक किस्म की खामोशी। तीन जीव, तीन द्वीप की तरह अपने-अपने वृत्त में तैर रहे थे कि तभी संघमित्रा ने मिसाइल-सी छोड़ी तो महाराज, धर्म आपके लिए जिल्लत से इज्जत की दुनिया तक पहुँचने का चोर दरवाजा ही निकला। बुरा मत मानिएगा गुरुदेव, पर हमारे गाँव के एक घर में एक हिजड़ा जन्मा-मुन्ना हिजड़ा। कुछ सालों तक वह परिवार में रहा, पर अपमान और जिल्लत से घबराकर वह वृन्दावन चला गया। वहाँ जाकर उसने राधा की सखि का धार्मिक चोला ओढ़कर स्वयं को सखि सम्प्रदाय से जोड़ लिया। आज वह मन्दिर में नाचती है, गाती है... आसपास के गाँव की औरतें उसे श्रद्धा से नमस्कार करती हैं। धर्म उसके लिए भी सेण्टी वॉल्व बना।हतप्रभ मालविका । हतप्रभ सुनील मुनि। चेहरे पर राख पुत गई। सीना दरक

बस उसी जलते हुए क्षण में सोच लिया, इस चौहद्दी से परे जाना है मुझे|५

निष्कर्ष

मधु कांकरिया का 'सेज का सेज पर संस्कृति' उपन्यास जैन धर्म की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में रचा गया एक ऐसा आख्यान है, जो सामाजिक संरचनाओं और मानवीय मनोविज्ञान को गहराई से समझने का अवसर प्रदान करता है। इसमें स्त्री की आंतरिक यात्रा, धर्म का यथार्थ और समाज के द्वंद्वों को बखूबी दर्शाया गया है। यह उपन्यास न केवल जैन समुदाय के लिए,बल्कि समग्र भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन के लिए भी एक महत्वपूर्ण कृति है।

----

[1] सेज पर संस्कृति,लेखिक:मधु काँकरिया,प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन प्रा.लिमिटेड::प्रकाशन वर्ष:२०१७, पृष्ठ १०६

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue V May 2025- Available at www.ijraset.com

[2] सेज पर संस्कृति,लेखिक:मधु काँकरिया,प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन प्रा.लिमिटेड::प्रकाशन वर्ष:२०१७, पृष्ठ ९५
[3] सेज पर संस्कृति,लेखिक:मधु काँकरिया,प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन प्रा.लिमिटेड::प्रकाशन वर्ष:२०१७, पृष्ठ १३८
[4] सेज पर संस्कृति,लेखिक:मधु काँकरिया,प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन प्रा.लिमिटेड::प्रकाशन वर्ष:२०१७, पृष्ठ १३९
[5] सेज पर संस्कृति,लेखिक:मधु काँकरिया,प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन प्रा.लिमिटेड::प्रकाशन वर्ष:२०१७, पृष्ठ १०१

©IJRASET: All Rights are Reserved | SJ Impact Factor 7.538 | ISRA Journal Impact Factor 7.894 |

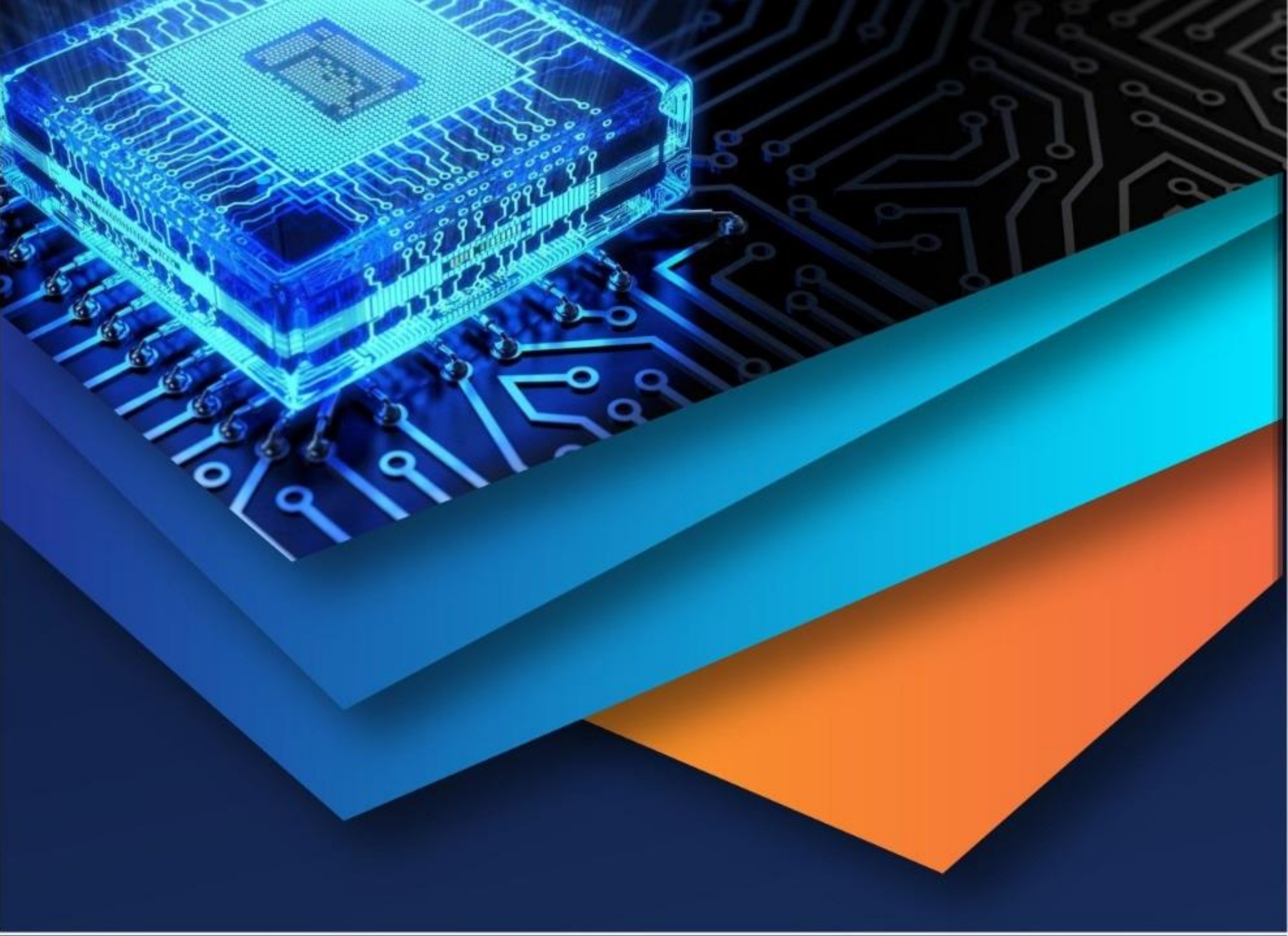

10.22214/IJRASET

45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

IMPACT FACTOR: 7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)